**RAJKIYA SNATKOTTAR MAHAVIDYALAYA JOSHIMATH, CHAMOLI**

**(COURSE OUTCOME AND PROGRAM OUTCOME)**

---

**BA (HINDI)**

**Program Outcome (POs)**

PO1. शिक्षक

PO2. भाषाविद्

PO3. अनुवादक

PO4. कवि

PO5. कथाकार

PO6. दार्शनिक

PO7. सम्पादक/संवाददाता

PO8. हास्यकार/व्यंग्यकार

## Course Outcome (COs)

## B.A.1st Year

| Course Name | Course Outcome (COs) |
|---|---|
| **प्रथम प्रश्न पत्र – हिन्दी भाषा एवं साहित्य** | COs1. छात्र/छात्राएं हिन्दी भाषा के उद्भव व विकास तथा हिन्दी के अन्तर्गत आने वाली प्रमुख बोलियों व भाषा के विविध रूप राष्ट्रभाषा, राजभाषा, मानक भाषा, सम्पर्क भाषा इत्यादि के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।<br>COs2. देवनागरी लिपि का नामकरण तथा उद्भव और विकास के साथ ही देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता, मानकीकरण एवं गुण-दोषों से छात्र अवगत हो सकेंगे। |

| | |
|---|---|
| | COs3. छात्र/छात्राएं हिन्दी साहित्य की व्युत्पत्ति, काव्य के विविध रूप काव्य-प्रणयन एवं काव्यलोचन में दक्षता प्राप्त कर सकेंगे और साथ ही हिन्दी गद्य की विधाओं (उपन्यास, नाटक, कहानी एकांकी, निबन्ध) का सामान्य परिचय व उनके तत्वों के बारे में परिचित होंगे।<br>COs4. साहित्य की अन्य गद्य विधाओं (रेखाचित्र, संस्मरण, डायरी, साक्षात्कार, जीवनी, रिपोर्ताज, यात्रा वृतांत) के बारे में सामान्य जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। |
| **द्वितीय प्रश्न पत्र – काव्यांग एवं हिन्दी कविता (आदिकाल से रीतिकाल)** | COs1. छन्द, अलंकार के पाठन से छात्र छन्दोबद्ध एवं अलंकृत काव्य के सृजन में निपुण होने चाहिए।<br>COs2. छात्र आदिकालीन वीरगाथात्मक साहित्य के साथ ही खुसरो की प्रेमपूर्वक काव्य रचनाओं के बारे में जान सकेंगे।<br>COs3. छात्र/छात्राएं भक्तिकालीन काव्य के प्रमुख कवियों कबीर, सूर, तुलसी व जायसी द्वारा रचित ग्रन्थों के माध्यम से ईश्वर के सगुण साकार तथा निर्गुण निराकार रूप के प्रति सात्विक प्रेम का ज्ञान प्राप्त कर मानवीय सद्भावना का भी परिज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।<br>COs4. छात्र/छात्राएं रीतिकालीन दरबारी काव्य रचनाओं के माध्यम से रीतिकालीन काव्य परिवेश के बारे में तथा रीतिकालीन कविता की कला और शिल्प का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। |

## B.A.2nd Year

| Course Name | Course Outcome (COs) |
|---|---|
| **प्रथम प्रश्न पत्र – गद्य एवं नाट्य साहित्य** | Cos1. छात्र/छात्राएं हिन्दी कथा साहित्य परम्परा का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।<br>Cos2. छात्र/छात्राएं निबन्ध एवं स्फुट गद्य विधाओं के बारे में तथा निबन्ध के तत्वों का सामान्य परिज्ञान प्राप्त कर हिन्दी साहित्य के प्रमुख निबन्धकारों के विचारों से प्रभावित होकर उनके विचारों को अपने जीवन से सम्बद्ध सकेंगे।<br>Cos3. जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित नाटक 'ध्रुवस्वामिनी' के माध्यम से नारी जीवन की स्वतंत्रता के लिए किये गये संघर्षों एवं देश प्रेम की भक्ति भावना को अपने जीवन में उतार सकेंगे।<br>COs4. चार एकांकी के माध्यम से देश प्रेम की भक्ति भावना एवं पारिवारिक, सामाजिक जीवन के महत्व को जान सकेंगे। |
| **द्वितीय प्रश्न पत्र – आधुनिक हिन्दी कविता** | Cos1. छात्र/छात्राएं आधुनिक हिन्दी कविता का प्रवृत्तिगत विकास का ऐतिहासिक एवं सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।<br>Cos2. महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला द्वारा शोक गीत 'सरोज स्मृति' में पिता-पुत्री के प्रेम व पुत्री की मृत्यु पर पिता की करुण दशा व पारिवारिक मूल्यों को समझ सकेंगे।<br>Cos3. छात्र/छात्राएं छायावादी साहित्य में रचित काव्य के माध्यम से जीवन में आने वाले विभिन्न प्रकार के सुख-दुःख तथा उनके निदान से परिचित हो सकेंगे।<br>COs4. छात्र/छात्राएं प्रयोगवादी कवियों द्वारा रचित साहित्य एवं उनके द्वारा सामाजिक एवं मानवीय जीवन के उत्थान हेतु सृजित काव्य को आत्मसात कर सकेंगे। |

# B.A.3rd Year

| Course Name | Course Outcome (COs) |
|---|---|
| **प्रथम प्रश्न पत्र – प्रयोजनमूलक हिन्दी** | Cos1. प्रयोजनमूलक हिन्दी का ज्ञान अर्जित कर साथ ही प्रयोजन मूलक हिन्दी के विविध रूपों से भी छात्र परिचित होंगे।<br>Cos2. पत्राचार एवं कार्यालय में प्रयोग की जाने वाली भाषा सामान्य एवं कार्यालयीय हिन्दी में अन्तःसम्बन्ध व कार्यालयीय हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली तथा पत्र लेखन से छात्र अवगत होंगे।<br>Cos3. सम्पादनकला, प्रिंट मीडिया में प्रयोग की जाने वाली भाषा पत्रकारिता के विविध पक्षों व संचार के श्रव्य दृश्य माध्यमों से छात्र परिचित होंगे।<br>COs4. जन संचार एवं मीडिया लेखन हेतु प्रयोग की जाने वाली हिन्दी का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। |
| **द्वितीय प्रश्न पत्र – जनपदीय भाषा साहित्य** | Cos1. गढ़वाली/कुमाउंनी भाषा के विविध रूपों, उद्भव और विकास का ज्ञान प्राप्त होगा।<br>Cos2. गढ़वाली/कुमाउंनी भाषा में रचित शिष्ट साहित्य व संस्कृति तथा स्थानीय परम्पराओं एवं रीति-रिवाजों के बारे में सामान्य जानकारी रख सकेंगे।<br>Cos3. गढ़वाली/कुमाउंनी रचनाकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की जानकारी के साथ ही काव्य सृजन करने में दक्षता प्राप्त कर सकेंगे।<br>COs4. गढ़वाली/कुमाउंनी नाटककार एवं कहानीकारों के लेखन में समाहित भारतीय उच्च आदर्शों का ज्ञान प्राप्त होना चाहिए तथा साथ ही नाट्य-तत्वों के प्रयोग का सामान्य परिज्ञान होगा। |

किशोरी लाल

असिसटेंट प्रोफेसर-हिन्दी

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जोशीमठ

जनपद – चमोली (उत्तराखण्ड)